# आत्मा सदैव स्वतंत्र है

एक समय दो महात्मा एक साथ रहा करते थे। इनमें एक गुरू तथा दूसरा शिष्य था। शिष्य प्रतिदिन भिक्षा ग्रहण करने के लिये नगर में जाया करता था। एक दिन जब शिष्य नगर में एक साहूकार के यहाँ भिक्षा मांग रहा था, तभी उस साहूकार के यहाँ पिंजड़े में बंद एक तोते ने उस शिष्य-महात्मा से कहाः महात्मा जी आप कहाँ रहते हैं? क्या आप मुझे यहाँ से मुक्त करने का कोई उपाय बता सकते हैं? क्योंकि मैं यहाँ पिंजरे में बहुत दुःख का अनुभव करता हूँ। हाँलाकि साहूकार और उसके घर के लोग मेरा बहुत ध्यान रखते हैं, परंतु स्वतंत्रता से उसकी तुलना नहीं की जा सकती। मैं अनंत और खुले आकाश में अपने अन्य मित्रों के साथ गुलाची भरता था। विभिन्न प्रकार के पेड़ों की शाखाओं पर बैठ कर विभिन्न प्रकार के फल तथा फूलों का आस्वादन किया करता था। इस प्रकार मैं अपने मित्रों के साथ अनन्य प्रसन्नता का अनुभव किया करता था। परंतु अब इन क्रूर पक्षी पकड़ने वाले तथा पक्षीयों को बंधन में रखने वालों से मैं दया की आशा कैसे कर सकता हूँ?

जिसे कष्ट होता है वही इसके दुःख को अनुभव कर सकता है। परंतु समय आयेगा जब इन क्रूर पक्षी पकड़ने तथा उन्हें बंधन में रखने वालों को भी इस अपराध का फल तो भोगना ही पड़ेगा। उस समय ये सभी रोयेंगे, चिल्लायेंगे, छटपटायेंगे और पश्चाताप करेंगे। परंतु आज इनके हृदय की आखें भी कैसी बंद हैं, और इन्हें मेरे बंधन का और मेरे परिवार तथा जाति से वियोग का दुःख भी अनुभव नहीं होता है। हे महात्मा जी! मैं कैसे अपने दुःखों का वर्णन आपके सामने करूँ? मेरे मन में असंख्य विचारों की लहरें उठती हैं, परंतु कोई भी विचार मुक्त होने का उपाय नहीं बन पाता। मेरे विचार में मुझे कोई आप जैसा गुरू चाहिये। मैं आपकी शरण में हूँ। कृपया मेरी सहायता कीजिये तथा कैसे भी मुझे इस बंधन से मुक्ति दिलाइये।"

इस प्रकार के करुणामय वचन सुनकर शिष्य-महात्मा ने कहाः "मैं तो तुम्हारी मुक्ति का कोई उपाय नहीं जानता। झूठ में बोलना नहीं चाहता। परंतु मेरे गुरूदेव बहुत पहुँचे हुए महात्मा हैं। मैं उनसे बात करके तुम्हें अवश्य ही कोई उपाय सुझाऊँगा।"

इस प्रकार तोते को सांत्वना देकर वह शिष्य अपने गुरू के पास पहुंचा। भिक्षा रखकर उसने गुरूजी को प्रणाम किया। उसने बेचारे तोते की पूरी कहानी भी गुरूजी को सुनाई। कहानी सुनकर पहले तो गुरूजी लोट-पोट होने लगे, तत्पश्चात निष्प्राण से होकर पृथ्वी पर लेट गये। इस दृश्य को देख शिष्य बहुत विचलित हो गया। उसने अब गुरूजी को आगे वह कहानी न सुनाने का संकल्प किया, तथा प्रयास करके गुरू को पूर्व की अवस्था में लाया।

अगले दिन वह पुनः भिक्षा के लिये नगर पहुंचा। उसी साहूकार के घर पहुंचने पर, वहाँ तोते ने शिष्य-महात्मा से गुरू द्वारा बताये उपाय को सुनाने का अनुरोध किया। तब उस शिष्य ने कहाः "भाई तुम्हारी करुण कहानी में तो पता नहीं ऐसा क्या था कि मेरे गुरू इसे सुनते ही मूर्क्षित हो गये।" बस इतना सुनते ही उस तोते ने अपने लिये गुरू का संदेश जान लिया, और उसी अनुसार व्यवहार करते हुए उसी समय मुक्ति को प्राप्त हुआ।

इस प्रकार हमारा स्वरूप तो सत्य, मुक्त और स्वतंत्र ही है। बंधन तो मात्र शरीर का है। हम सब भी भगवान को याद करते हुए और शरीर बंधन में न बंधते हुए, इस संसार में प्रसन्नता से रहकर मुक्ति पा सकते हैं।

बोलो हर-हर महादेव